देवनागरी में कुँड़ुख़ भाषा की लेखन समस्या और समाधान तथा कुँड़ुख़ गिनती एवं पहाड़ा के सरलीकरण का प्रयास

कुँड़ुख़ भाषा की लेखन समस्या और गिनती को सुगम एवं सरल करने हेतु अब तक कई पहल हुए। इस क्रम में दिनांक 26.08.2000 को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विष्वविद्यालय, राँची के सभागार में सम्पन्न हुए कार्यषाला में शून्य (0) का नामकरण 'निदि' रखा गया। उसके बाद दिनांक 24.09. 2001 को पुनः जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के सभागार में कुँड़ुख़ गिनती मानकीकरण संबंधी दूसरी बैठक हुई, जिसमें आम सहमति से निर्णय लिया गया कि शून्य के लिए प्रस्तावित नामकरण 'निदि' को स्वीकार किया जाय तथा शून्य वाली बड़ी संख्या का नाम दैनिक कार्यों के उपयोग में आने वाली वस्तुओं के नामकरण के समरूप गिनती के नामकरण को रखे जाँए, जिससे याद करने एवं समझने में आसानी होगी तथा गणित सीखने में आसानी होगी।

दिनांक 24.09.2001 को हुए गिनती का नामकरण में 1 से 19 तक पूर्ववत रखा गया, जो एक धरोहर की तरह है। षून्य का नामकरण 'निदि' को स्वीकार करते हुए गिनती का मानकीकरण किया गया। उसके बाद 10 के गुनांक की संख्या को नामित किया गया। जैसे – 2x10 =20 = एन्दी, 2x10 = 30 = मुन्दी, 4x10 = 40 = नाख़दी, 5x10 = 50 = पन्दी, 6x10 = 60 = सोयदी, 7x10 = 70 = सायदी, 8x10 = 80 = आख़दी, 9x10 = 90 = नयदी रखा गया। बड़ी संख्या (दो से अधिक अंक वाले संख्या) के नामकरण हेतु दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं को आधार मानकर नामित किया गया। इस तरह – सौ = सुड्डी, हजार = हुड्डी, लाख = लुड्डी, करोड़ = किड्डी, अरब = उड्डी, खरब = ख़ूड्डी कहा गया। यहाँ – एँड़ x निदि = एन्दी की तरह है जैसा गणित में होता है या कुछ और इस तरह, संख्याओं के नामकरण के इस नये तरीके में थोड़ी चूक हो गई।

आधुनिक गणित में अंकों को 10 गुणांक के मानक सिद्धांत में स्थापित किया गया है। जिसे MKS System कहते हैं अर्थात मीटर, किलोग्राम एवं सेकेंड सिस्टम। इसमें 2x10 =20, 2x10 = 30, 4x10 = 40, 5x10 = 50, 6x10 = 60, 7x10 = 70, 8x10 = 80, 9x10 = 90 समझा जाता है। आदिवासी समाज के लिए भी गणित एवं विज्ञान के मानक सिद्धांत के अनुरूप होना चाहिए, परन्तु विष्वविद्यालय स्तर पर अबतक भूल–चूक सुधार नहीं किया गया है। इस पर मंथन होना चाहिए!!

इस आशय पर अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, राँची की विचार गोष्ठी कार्तिक उराँव कुँड़ुख़ लूरकुड़िया, करमटोली, राँची के कार्यालय में दिनांक 11.07.2011 को डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 हरि उराँव, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 (श्रीमती) शान्ति खलखो, फा0 अगस्तिन केरकेट्टा एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। बैठक में गहन विचार–विमर्ष के बाद निर्णय लिया गया कि कुँड़ुख़ गिनती में 1 से 19 तक का नाम पूर्व की भाँति रहे तथा 20, 30, 40, 50, 60, 70, 80, एवं 90 का नामकरण गणित के सिद्धांत के अनुसार 10 के गुणांक में रखे जाने पर सहमति बनी। इस गोष्ठी में वर्तनी समस्या पर भी विचार किया गया। गोष्ठी में डॉ0 निर्मल मिंज जो स्वयं गणित विषय के स्नातक हैं ने सुझाव दिया कि – इस समस्या का समाधान, वर्तमान तकनीक एवं भाषा विज्ञान को आधार मानकर किया जाना चाहिए।

कुँड़ुख़ भाषा की लेखन समस्या के समाधान हेतु भाषा विज्ञान एवं आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों द्वारा दिये गये सुझाव पर अमल किये जाने की आवष्यकता है। भाषाविदों के अनुसार – कुँड़ुख़ भाषा, उतरी द्रविड़ भाषा समूह की भाषा है। हिन्दी साहित्यकारों द्वारा, उतरी द्रविड़ भाषा की लम्बी ध्वनि (Long phone) को लिखने के लिए '' **:** '' (कॉलन/उपविराम) चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जो तकनीकि दृष्टि से बेहतर है। इसी तरह कुँड़ुख़ भाषा में उच्चरित हेचका हरह (Glotal stop) को कुँड़ुख़ भाषियों

द्वारा अ़ चिह्न से लिखा जाता है तथा षब्दखण्ड सूचक (Syllable index) के लिए " ' " (अपॉस्ट्रोफी) का प्रयोग किया जाता है, जो स्वागत योग्य है। इसके अतिरिक्त संख्याओं का नामकरण 10 के गुणांक में किया जाना चाहिए। इस आषय पर डॉ0 नारायण उराँव ''सैन्दा'' कहा कि – इग्नू के पाठ्यक्रम (एम0एच0डी0–6) में द्रविड़ भाषा की लम्बी ध्वनि के लिए तथा हिन्दी साहित्य के विद्वान फ़ा0 कामिल बुल्के की पुस्तक अंग्रेजी हिन्दी षब्दकोष में लम्बी ध्वनि के लिए ^ ः * चिह्न का व्यवहार किया गया है। इसे झारखण्ड के वयोवृद्ध हिन्दी साहित्यकार डॉ0 दिनेष्वर प्रसाद द्वारा भी समर्थन किया गया है।

उपरोक्त विचारों पर डॉ0 हरि उराँव, डॉ0 नारायण भगत एवं डॉ0 श्रीमती षान्ति खलखो ने सुझाव दिया कि भाषा–विज्ञान एवं तकनीकि सम्मत बातों को आवष्यकता अनुसार स्वीकार करना होगा अन्यथा हम पीछे रह जाएंगे। परिचर्या में अपनी बात रखते हुए डॉ0 हरि उराँव ने स्पष्ट किया कि लम्बी ध्वनि के लिए " : " (कॉलन) चिह्न व्यवहार किया जाना IPA (International Phonetic Alphabets) के अनुरूप ही है। वहीं पर हेचका हरह ध्वनि के लिए "अ् / अ़ " चिह्न को स्वीकार किये जाने से लिखने, पढ़ने और समझने में आसानी होगी। षब्द खण्ड सूचक चिह्न के स्थान पर '' ' '' (अपॉस्ट्रोफी) का चुनाव चिन्ह को पहले ही स्वीकार किया जा चुका है। गोष्ठी के अंत में देवनागरी लिपि से लिखने समय उठ रही समस्याओं का समाधान हेतु सर्वसहमति से निर्णय लिया गया कि :–

1. कुँड़ुख़ भाषा की लम्बी ध्वनि को दिखलाने के लिए स्वर के बाद " ः " (कॉलन) चिह्न दिया जाय। जैसे – एःड़ा, ओःड़ा, मोःड़ा, जोःड़ा, चाँःड़े–चाँःड़े, कोंःड़ा–कोंःड़ा।

2. हेचका हरह के लिए "अ़" चिह्न दिया जाय। जैसे – नेअ़ना, चिअ़ना, बअ़ना, होअ़ना।

3. षब्द खण्ड सूचक के लिए '' ' ''(अपॉस्ट्रोफी) चिह्न दिया जाय। जैसे – बरई–बर'ई, कमई – कम'ई।
4. तोलोंग सिकि (लिपि) को पठन–पाठन के पाठ्यक्रम में षामिल किये जाने की व्यवस्था करवायी जाय।
5. कुँड़ुख़ गिनती को गणित एवं विज्ञान पर आधारित 10 के गुणांक में तैयार किया जाय।

मानक वर्तनी एवं गिनती हेतु वर्ष 2015 कई विषेषज्ञों से विचार–विमर्ष किया गया। कुँड़ुख़ गिनती को अन्तर्राष्ट्रीय परिदृष्य में सरल एवं मानक स्वरूप के डॉ. नारायण उराँव द्वारा, डॉ. निर्मल मिंज, तमिल एवं हिन्दी के विद्वान डॉ. एम. गोविन्दराजन, नोर्थ ईस्ट यूरोपियन यूनिवर्सिटी हॉलैन्ड के चांसलर मानवषास्त्री प्रो. डॉ. मोहनकान्त गौतम एवं मानवषास्त्री प्रो. डॉ. करमा उराँव के सुझाव पर समीक्षोपरांत आवष्यक संषोधन किये जाने की रूपरेखा तैयार की गई, जिसमें कहा गया कि गिनती एवं पहाड़ा में कुछ ऐसा काम हो जिससे बच्चे आसानी से समझें और याद कर सकें।

अंतर्राष्ट्रीय गणित के अनुसार 20 = 2 x 10, 30 = 3 x 10, 40 = 4 x 10, 50 = 5 x 10, 60 = 6 x 10, 70 = 7 x 10, 80 = 8 x 10 तथा 90 = 9 x 10 समझा जाता है। गणित के इस सिद्धांत के आधार पर कुँड़ुख़ गिनती के अंक को एँड़ x दोय = एन्दोय = 20, मून्द x दोय = मुन्दोय = 30, नाख x दोय = नख़दोय = 40, पंच्चे x दोय = पन्दोय = 50, सोय x दोय = सोयदोय = 60, साय x दोय = सायदोय = 70, आख़ x दोय = आख़दोय = 80, नय x दोय = नयदोय = 90 की तरह समझा जाना चाहिए है। डॉ. नारायण उराँव द्वारा इस विषय में अच्छे कार्य किये हैं। उन्होंने कईलगा का नवीकृत संस्करण तथा पुना चन्ददो एवं आधुनिक कुँड़ुख़ व्याकारण में इन बातों को विस्तार से प्रस्तुत किया है। डॉ. उराँव एवं डॉ. निर्मल मिंज के साथ वर्ष 2018 में एक लेख प्रस्तुत किया गया जिसमें आधुनिक गणित के सिद्धांतों को आधार मानकर सुधार किये जाने के लिए उपाय बतलाये गये हैं। इसके अतिरिक्त आधुनिक हिन्दी साहित्यकारों द्वारा स्थापित, नये तरीकों के आधार पर अर्द्धस्वर अ अथवा हेचका के लिए ' अ़ ' चिह्न तथा लम्बी ध्वनि के लिए '' ः '' सेला चिह्न एवं षब्दखण्ड सूचक या घेतला '' ' '' चिह्न का प्रयोग किया गया है। इस विषय पर कुँड़ुख़ विद्वतजनों का सुझाव था कि कुँड़ुख़ गिनती एवं पहाड़ा का स्वरूप मधुर एवं

सरल होना चाहिए। यदि ऐसा संभव हुआ तो हम सभी, आने वाली पीढ़ी को गणित सिखलाने में मददगार होंगे।

उपरोक्त तथ्यों पर अध्ययन के पष्चात् निम्नांकित तथ्य स्पष्ट होता है :–

1. गिनती का नामकरण 1 से 19 तक पूर्ववत रखा जाना चाहिए, जो एक धरोहर की तरह है।

2. षून्य का नामकरण 'निदि' को स्वीकार किया जाना चाहिए।

3. पहाड़ा को सरल बनाने हेतु 10 के गुणांक के अन्तर्राष्ट्रीय गणित के सिद्धांत पर, छोट और सरल षब्द समूह रचे जाएँ। इस ओर ''आधुनिक कुँड़ुख़ व्याकरण'' (झारखण्ड झरोखा प्रकाषन, वर्ष 2018) में विस्तृत चर्चा है।

4. कुँड़ुख़ भाषा की लम्बी ध्वनि को दिखाने के लिए स्वर के बाद " **:** " (कॉलन) चिह्न दिया जाय। जैसे – एःड़ा, ओःड़ा, मोःड़ा, चाँःड़े–चाँःड़े, कोंःड़ा–कोंःड़ा। इग्नू के पुस्तक में उतरी द्रविड़ भाषा के लिए यह व्यवहारित है।

5. हेचका हरह के लिए "अ़" चिह्न दिया जाय। जैसे – नेअ़ना, चिअ़ना, बअ़ना, होअ़ना, चोअ़ना, बअ़ना, रअ़ना।

[संस्कृत वर्णमाला में ड़ एवं ढ़ वर्ण नहीं है अर्थात हिन्दी वर्णमाला में ड़ तथा ढ़ ध्वनि का संस्करण, आर्य भाषा परिवार में बाहरी भाषा के प्रभाव को दर्षाता है। उर्दू, अरबी, कुँड़ुख़ (उतरी द्रविड़ भाषा) एवं गोंडी (मध्य द्रविड़ भाषा परिवार) आदि भाषाओं के शब्दों को लिखने के लिए देवनागरी लिपि के अक्षरों के नीचे डॉट (तलविन्दु) चिह्न देकर लिखा जाता है। जैसे – ख़ब़र, ग़ब्बर, व़ज़ीर, वे़ल, चिअ़ना, बिअ़ना, नेअ़ना, बेअ़ना, होअ़ना, चोअ़ना, बअ़ना, रअ़ना, एड़पा, माड़ना, बाढ़ी गढ़े, ख़ज्ज, ख़ेंस, इज़िरना, कोरज़ो, बाज़लो आदि। संस्कृत साहित्यों में (मनुस्मृति, अध्याय 2, ष्लोक 22, प्रकाषक : संस्कृति संस्थान, बरेली, उत्तर प्रदेष) आर्यावर्त देष जिसकी सीमा उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विंद्याचल, पूरब में सागर एवं पष्चिम में सागर बतलाया गया है। भारतीय इतिहास में विंद्याचल पर्वतमाला से नर्मदा के बीच का भूभाग को गोंडवाना कहा गया है और भाषायी दृष्टि से यहाँ की भाषा गोंडी एक मध्य द्रविड़ भाषा है। इसी तरह बाल्मीकि रामायण के करूष देष (गंगा और सोन नदी के बीच का क्षेत्र जिसे विंद्याचल पर्वत श्रृंखला के अंतर्गत कैमूर पर्वत क्षेत्र कहा जाता है) जो द्रविड़ षासक ताड़का (जो रावण की फूआ थी) का क्षेत्र था। हजारों वर्षों तक साथ–साथ रहने से सांस्कृतिक सम्मिश्रण हुआ और बड़े समूह की भाषा को राजनैतिक संरक्षण प्राप्त होते ही विकसित होती गई। इस प्रकार हिन्दी के विकास में मध्य द्रविड़ एवं उतरी द्रविड़ भाषा का भी प्रभाव है। अतएव उतरी द्रविड़ भाषा के ध्वनि को दिखलाने के लिए देवनागरी अक्षरों के नीचे तल विन्दु दिया जाना बेहतर उपाय है। कुँड़ुख़ में ड़, ढ़, ख़, ज़ तथा अ़ ध्वनि के लिए तलविन्दु लिखने का रिवाज बेहतर समाधान है। इस करूष देष को कुछ साहित्यकार कुड़ुख़ देष मानते हैं क्योंकि प्रसिद्ध ग्रंथ बाल्मीकि रामायण में वर्णित करूष देष द्रविड़ों के कब्जे में था, जिसे भगवान राम ने एक महिला षासक का बध करके अपने सामराज्य का विस्तार किया। यह क्षेत्र आर्य भाषा परिवार के षासकों के कब्जे में आने से पहले संभवतः द्रविड़ भाषी कुड़ुख़ देष रहा था, जिसे संस्कृत भाषियों ने कुड़ुख़ देष से करूष देष किया हो, क्योंकि संस्कृत में ड़ और ख़ ध्वनि नहीं है।]

6. षब्द खण्ड सूचक के लिए '' **'** ''(अपॉस्ट्रोफी) चिह्न दिया जाय। जैसे – बरई–बर'ई, कमई – कम'ई।

संदर्भ सूची :–

1. अंग्रेजी हिन्दी षब्दकोष : फ़ादर कामिल बुल्के, पृष्ठ – IX.
2. एम.एच.डी.–6 : इग्नू, नई दिल्ली, 25.5.1 : द्रविड़ परिवार (विष्व की भाषाएँ एवं भारतीय भाषा परिवार)।

3. KURUX PHONETIC READER, CIIL series - 9, : Dr. Fransis Ekka.
4. Modern Kurux Grammar - Dr. N. Bhagat & Dr. N. Oraon. August 2018.
5. IMPROVE YOUR PRONUNCIATION - VICTOR W. TUCKER, S. J. ; P - I
6. Oxford English Hindi Dictionary, Edited by : S K Verma & R N Sahai, Page - XII, XIII

समर्पित – डॉ0 (श्रीमती) ज्योति टोप्पो उराँव
सहायक प्राध्यापक, गोसनर कॉलेज, राँची
दिनांक : 03.03.2020

****